SUMMARY OF PH.D. – RAM CHARIT MANAS VARDAN AUR SHAP KI LILAON KA ADHIYAN

By. R.S. TIWARI

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध 'मानस' वर्णित वरदान-शाप सम्बन्धी लीलाओं के अध्ययन पर आधृत है। इसको यथावश्यक वैज्ञानिक, संगतपूर्ण और सार्थक बनाने हेतु इसे विभिन्न अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। नीचे अध्यायों के क्रमानुसार अध्ययन का उपसंहार प्रस्तुत है।

प्रथम अध्याय शून्य संख्यक है। वस्तुत: यह विवेच्य विषय के परिप्रेक्ष्य और पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करता है। इसलिए इसमें विषय के महत्त्व और वरदान - शाप की भावना के विकास के साथ तुलसीदास की जीवनी और कृतित्व, पूर्ववर्ती अध्ययन एवं सम्बन्ध शोध की प्रक्रिया पर विचार किया गया है।

तुलसीदास भारतीय वाङ्मय के उल्लेखनीय प्रतिमान है। इन्होंने 'मानस' की रचना में पूर्ववर्ती सर्जनात्मक परम्परा के संगतपूर्ण अंशों का उपयोग करते हुए अपनी प्रतिभा को समुचित रूप से उद्भासित किया है। इसी क्रम में उनकी महान कृति 'रामचरितमानस' में वरदान-शाप की लीलाओं का यथा आवश्यक विनियोग हुआ है। इसलिए इस प्रबन्ध में 'मानस' वर्णित वर - शाप सम्बन्धी विषय को दृष्टि में रखते हुए मान्य शोधप्रक्रिया के अनुसार उसकी विशिष्टताओं का अध्ययन किया गया है।

प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में वरदान और शाप के घटकों का विश्लेषण हुआ है। 'मानस' में वरदान और शाप की लीला-कथाएँ घटनाओं के अभिन्न अंगरूप में आई हैं। चूँकि प्रत्येक घटना अपने आपमें ऐसी क्रिया होती है जिसके उद्भव, विकास और परिणति के निर्धारित क्रम एवं घटक होते हैं। इस अध्याय में वरदान और शाप की इन्हीं कथात्मक घटनाओं का विभिन्न घटकों, दायकों, प्राप्तकर्ताओं, कारणों और परिणामों का अलग से विश्लेषण किया गया है। ऐसा करने से वर और शाप के पूरे संदर्भ की सम्बद्धता वृत्तांत, पूर्वापर और परिणति के पक्षों को स्पष्ट रूप से व्यंजित करने में सहायता मिलती है। 'वर-शाप' की लीलाएँ कथारूप में चित्रित, वर्णित हुई हैं। इसलिए उनके वर्गीकृत विवेचन द्वारा अध्याय में समुचित पारदर्शिता लाने पर विशेष बल दिया गया है। कोई भी कथा प्रवाह रूप में प्लावित होती हुई अपने पाठक या दर्शक की क्या, क्यों, कहाँ, कैसे आदि सार्वनामिक जिज्ञासाओं को संतुष्ट करने के कारण सार्थक सिद्ध होती है। लीलाकाव्य दृक, श्रव्यपरक उपादानों और उनके यथास्थान समुचित मात्रा में उभरने की स्थिति के कारण काव्य सीमा में ही नाटक के कुलशील को पाने में समर्थ हो जाते हैं। इसी प्रसंग में यह अध्याय अध्ययन की पीठिका के उपरांत नियोजित किया गया है।

शाप और वरदान की लीलाएँ, घटना के रूपों में कथात्मक ढाँचा धारण करती हैं। इसलिए कथा होने के कारण इनमें आख्यान के उपादान और संयोजन प्रकट होते है। कथाएँ, अपने विवेच्य विषय के अनुरूप आकार ग्रहण करती हैं और विभिन्न प्रतिरूपों को उद्भासित करती हैं। इन सभी को कथा-विधान के अन्तर्गत रखा गया है। वर-शाप संबंधी लीलाओं के

वर्णन में प्रमुख रूप से दो प्रकार की कथात्मक प्रवृत्तियाँ दिखलायी पड़ती हैं। ये हैं- कथा-श्रृंखला और कथानक रूढ़ियाँ। इनमें श्रृंखलापरक विधान लीलापरक घटनाओं में निहित कार्य-कारण से प्रभावित होकर कथा के धरातल को रैखिक और धनात्मक प्रतिरूपों में बाँधता है। एकल श्रृंखला में कार्य-कारण से प्रभावित घटनाओं की विविधता नहीं होती है। इनकी कथा का ढाँचा भी सपाट और एकस्तरीय होता है। दूसरे प्रतिरूप में कथा स्थित पूर्वापरक कार्य-कारण द्वारा विधान पट पर सघन बुनावट होती है। फलस्वरूप इसमें बहुश्रृंखलात्मक कथात्मक ढाँचा विकसित होते हैं। कथा-विधान के विभिन्न प्रकारों में कथानक-रूढ़ि का बहुत महत्व होता है। लोक-कथाओं में भी रूढ़ियों का बहुत विनियोग हुआ है। 'रूढ़ि' को अंग्रेजी में 'मोटिफ' नाम दिया गया है। ये मुख्यत: विषय और विधान से सम्बद्ध होते हैं। इनसे कभी अलग-अलग और कभी संयुक्त रूप से कथा की विषय-वस्तु और विधात्मकता अग्रसर होने में समर्थवान होती है। इससे सहृदय की जिज्ञासाओं में स्थित 'क्या', 'कहाँ', 'कौन' आदि प्रश्नों के अनुकूल उत्तर सुलभ हो जाते हैं।

'मानस' की लीला - कथाओं में उक्त दोनों प्रवृत्तियाँ कथा के विभिन्न उपादानों को नातिदीर्घ रूप से समन्वित करती हैं। इसके कारण एक तत्व या उपादान प्रमुख होता है और अन्य संकेतित होते हैं, जैसे- कथात्मक घटना के वर्णन में कथोपकथन चरित्र-चित्रण आदि भी यथास्थान उभरते हैं।

'मानस' की वर-शाप लीलाएँ, केवल हिन्दी ही नहीं, विश्व-साहित्य में भी अपने तत्व-निरूपण, मूल्यपरक उपगम, जीवन-जगत संबंधी अनुभूतियों आदि के प्रसंग में मूल्यवान हैं। इनसे 'मानस' की रचनात्मकता में परिपूर्णता आई है और कृति का प्रयोजन भी सिद्ध हुआ है। यह ध्यातव्य है कि ये लीलाएँ मानस के साथ पूर्ववर्ती वाङ्मय में भी वर्णित हुई हैं। किसी महान कलाकृति में परम्परा और प्रयोग की परस्परता का होना स्वाभाविक है। प्रत्येक देश-काल अपनी अपेक्षाओं और आशाओं के अनुरूप जीवन-जगत संबंधी नाभिकीय प्रश्नों को उठाता है एवं उनका समुचित समाधान भी ढूँढ़ता है। किन्तु ये प्रश्न और उत्तर किसी शून्य या संदर्भ रहित स्थितियों में विकसित नहीं होते हैं। इसीलिए युगान्तकारी मनीषी के रूप में तुलसीदास ने वेद-पुराण, महाकाव्य आदि की विकासधाराओं से लीला-वर्णन के सूत्रों का आकलन किया है और ऐसा करने के क्रम में उन्होंने गृहीत काव्य सामग्री को दुहराने के बदले उनका पुनरूत्पादन किया है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत देश, काल और व्यक्ति-ये तीनों प्रकट हुए हैं। महाकवि ने लीलाओं के उद्धरण - क्रम में 'मार्मिक स्थलों की पहचान' करने की अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया है। इसके फलस्वरूप 'मानस' में अनेक स्थलों में लीलाओं की प्रस्तुति और वर्णन के आयामों पर 'रामायण' से भिन्नता दृष्टिगत होती है। इसके परिणामस्वरुप 'मानस' के रामवनगमन, राम-केवट संवाद, वशिष्ठ-निषाद मिलन, आहत जटायु से राम की भेंट आदि प्रसंग उल्लेखनीय हैं। निस्सन्देह इन सभी की सहायता से तुलसीदास ने एक साथ पात्रों के शीलनिरूपण, नीति-अनीति मूल्यांकन और रस-दशा का उपबृहन किया है।